Osaka University Knowledge Archive

Title	स्वर्णिम　दृश्य
Author(s)	मोईन उद्दीन, मोहम्मद
Citation	多言語翻訳 : 太宰治『黄金風景』. 2012, p. 18-21
Version Type	VoR
URL	https://hdl.handle.net/11094/32757
rights	
Note	

Osaka University Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

Osaka University

स्वर्णिम दृश्य

मोहम्मद मोईन उद्दीन

समुद्र तट पर हरा भरा बलूत का पेड़, उस पेड़ के चारों तरफ बंधी पतली सोने की ज़ंजीर
- पुश्किन -

मैं बचपन में कुछ अच्छी प्रवृति वाला मनुष्य नहीं था। प्राय: घर की नौकरानियों को परेशान करता, उन्हें फटकार लगाता रहता। मुझे आलसपन से बड़ी घृणा होती थी। जिसकी वजह से मैं आलसी नौकरानियों को विशेष कर फटकार लगाया करता था। ओकेई बहुत आलसी नौकरानी थी। यदि उसे एक सेब को छीलने के लिए कहा जाए तो वह उसे छीलते-छीलते दो तीन बार हाथ रोक कर न जाने क्या सोचती रहती। अगर उसे "अरी" कहकर उसी समय सख्ती से न टोका जाए तो, एक हाथ में सेब और एक हाथ में चाकू लिए हुए न जाने कब तक इधर उधर ताकती रहती। कोई भी उसे देख बावली समझ बैठता। मैं कई बार उसे रसोई घर में बिना किसी काम के मूर्खों की तरह खड़ी हुई पाता। एक बच्चा होने के बावजूद थोड़ी झिझक के साथ विचित्र रूप से उसे फटकार लगाता। "अरे ओकेई दिन छोटा होता है रे" इत्यादि किसी वृद्ध की तरह डांटता। अभी सोचता हूँ तो मानो शरीर सिहरा देने वाले शब्द उस पर दे मारता था। उससे भी नहीं रहा गया तो मैंने उसे एक दिन बुलाया और चित्रों से भरी पड़ी चित्रों वाली पुस्तक से परेड करते हुए सेना के जवानों की तस्वीरों को एक-एक कर के क़ैंची से काटने को कहा। उस पुस्तक में अपने अपने कार्यों में व्यस्त सैंकड़ों जवानों- घोड़े की पीठ पर बैठे हुए जवान, हाथ में ध्वज लिए हुए जवान, कन्धे पर बन्दूक लटकाए हुए जवान इत्यादि की तस्वीरें थीं। उस कौशलहीन ओकेई को सुबह से शाम हो गई, बिना कुछ खाए पिये वह केवल तीस तस्वीरों को ही काट सकी। उसमें भी उसने जनरल की आधी मूंछ ही उड़ा दी, तो बन्दूक लटकाए हुए जवान के हाथ को ऐसा काटा कि वह ठीक भालू के पंजे की तरह दिखने लगा। मैंने उसको उसकी हर गलती के लिए फटकारा। गर्मी का मौसम था। ओकेई को बहुत पसीना आता था। कटी हुई तस्वीरें उसके हाथ के पसीने से तर हो चुके थे। यह देख मैं क्रोध से लाल हो उठा और उसे एक लात दे मारी। अपनी समझ से उसके कंधे पर ठोकर मारी थी, लेकिन ओकेई अपने दाएं गाल को पकड़, मुंडी गाढ़ कर रोने लगी और रोते रोते उसने कहा, आज तक मेरे माता-पिता ने भी मुझे मेरे चेहरे पर लात से नहीं मारा है, मैं सर्वदा यह याद रखूंगी, सिसकी भरते हुए उसने कहा। ज़ाहिर है, मुझे बहुत बुरा लगा। उसके अतिरिक्त भी, जैसे कि उसके भाग्य में ही लिखा था, मैंने उसको बहुत सताया। यहाँ तक कि अभी भी एक सीमा तक मुझे मूढ़ और मूर्ख लोग थोड़ा भी सहन नहीं होते हैं।

एक वर्ष पहले की बात है। मुझे घर से निकाल दिया गया। एक रात में ही मेरी आर्थिक स्थिति बहुत बुरी हो चुकी थी। गली गली में भटकता, हर द्वार पर गुहार लगाता, हर दिन को एक जीवन मानता हुआ मैंने यह सोचना शुरू ही किया था कि कलम से अपना जीवन व्यतीत करने का कुछ प्रबंध कर लूँगा, उसी समय मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया। लोगों की कृपा से ग्रीष्म ऋतु में चिबा प्रिफेक्चर के फुनाबाशी शहर के ज्वारीय क्षेत्र[1] वाले समुद्र के पास वाले इलाके में एक छोटा सा घर किराये पर ले स्वयं खाना वाना बनाने का प्रबंध कर सका। हर रात पाजामा भीग जाने के जितना बहने वाले पसीने का सामना और उस हालत में भी काम करने की आवश्यकता... हर सुबह केवल एक बोतली[2] ठंडे दूध के सहारे किसी तरह जीवित रह लेने की खुशी महसूस करता। मेरा सिर दर्द और थकावट से इतना चूर होता रहता कि गलियारे के किनारे पर खिले हुए कनेर के फूल, केवल धधकती हुई आग की लौ की तरह महसूस होते।

उन्हीं दिनों की बात है। फैमली शिनाख्त करने वाला दुबले पतले व्यक्तित्व का मालिक लगभग चालीस वर्षीय चौकीदार, दरवाजे पर रजिस्टर में लिखा मेरा नाम और दीवानों की तरह बढ़ी हुई मेरी दाढ़ी वाली शक्ल को बार बार मिलाते हुए "अरे, आप ... के छोटे मालिक हैं न?" चौकीदार के शब्दों में मेरे अपने गाँव की बोली भरी पड़ी थी। इसलिए, मैंने बिना किसी अपनाइयत के "जी हाँ" जवाब दिया। और "आप?"

चौकीदार ने अपने धँसे हुए चेहरे से बड़ी सी मुस्कराहट के साथ कहा -

"अरे, तो आप वही हैं। शायद आप भूल गए होंगे। लगभग बीस वर्ष पहले मैं K[3] में एक टमटम वाला था"

K मेरे जन्मस्थान वाले गाँव का नाम था।

"जैसा कि आप देख रहे हैं वैसा ही हूँ", मैंने सीधे मुंह जवाब दिया। "मेरी भी हालत अभी कुछ अच्छी नहीं है"

"कोई बात नहीं", चौकीदार उसी तरह से खुश होते हुए थोड़ा हंसते हुए, "उपन्यास लिखेंगे तो एक दिन अवश्य ही आपको सफलता मिलेगी"

मैंने एक तीखी सी मुस्कुराहट दे दी।

"किन्तु" चौकीदार अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी करते हुए बोला, "ओकेई हमेशा आप के बारे में बात करती है"

"ओकेई?" मैं इस बात को थोड़ा जल्दी पचा नहीं पाया।

"ओकेई भई! लगता है भूल गए? आप के घर की जो नौकरानी थी---"

याद आगया। अच्छा ! अच्छा तो यों ही थोड़ी कराहट के साथ मेरे मुंह से निकल पड़ा। वहीं दरवाजे के पास की छोटी सीढी[4] पर उकड़ूं बैठे बैठे मेरा सिर थोड़ा घूम सा गया। बीस साल पहले एक आलसी नौकरानी के साथ किया गया मेरा व्यवहार एक-एक कर मेरे मस्तिष्क

में घूम गया। मैं स्वयं को उसे बर्दाश्त करने के सक्षम नहीं पा रहा था।

"क्या वह सकुशल है?" अकस्मात् सिर उठा न जाने क्यों इस तरह का अनुचित प्रश्न मेरे जबान से निकल पड़ा। निःसन्देह एक आपराधिक, दासवत् और प्रार्थी वाली मुस्कुराहट मेरे चेहरे पर भरी पड़ी थी। ये याद अभी भी मेरे अंदर विद्यमान है।

"उं, हाँ, किसी तरह से" निश्चिंत होकर प्रसन्नता के साथ जवाब दे, चौकीदार ने रुमाल से अपना पसीना पोंछते हुए कहा, "यदि आपको कष्ट न हो तो अगली बार आपका धन्यवाद अदा करने के लिए उसे भी साथ ले आऊँ"

मैं उछल सा गया। नहीं नहीं! उसकी आवश्यकता नहीं है, साफ़ साफ़ इंकार करते हुए, मैं शब्दों से वर्णन न कर सकने वाला अपमान महसूस कर रहा था।

परन्तु चौकीदार बहुत प्रसन्न दिख रहा था, और उसने कहा-

"बच्चों के बारे में बताऊँ तो, सबसे बड़ा वाला यहीं पास के रेलवे स्टेशन पर काम करता है। उसके बाद एक लड़का, फिर एक लड़की, उसके बाद एक और लड़की है। सबसे आखिर वाली आठ वर्ष की है जो के इस वर्ष प्राथमिक विद्यालय में दाखिल हो चुकी है। अब जाकर थोड़ा चैन मिला। ओकेई ने भी काफी संघर्ष किया। क्या बताऊँ, वह तो आप के जैसे बड़े घर में उसने प्रशिक्षण प्राप्त किया था, जो कहीं न कहीं बहुत कुछ अलग सा था।" थोड़ा चेहरा लाल कर हंसते हुए, "ये सब आप की ही कृपा थी। ओकेई भी हमेशा आप के बारे में बात करती रहती है। इस बार की छुट्टी में उसे भी साथ लेकर आपका धन्यवाद करने के लिए आऊंगा" अचानक गंभीरता के साथ, "ठीक तब आज इतना ही, आप अपना ध्यान रखियेगा।"

उसके बाद, तीन दिन बीत चुके थे। मैं काम से अधिक पैसे की चिंता में परेशान था। घर में चुपचाप बैठा न गया तो मैंने हाथ में बांस की सहारे की छड़ी लेकर समुद्र की ओर निकलने की सोच कर खड़-खड़ाते हुए द्वार को खोला ही था कि बाहर तीन जनों को, युकाता[5] पहने हुए माता-पिता और लाल रंग का कपड़ा पहनी हुई बच्ची, चलचित्र कि तरह एक दूसरे के बगल में एक कतार में खड़े हुए पाया। यह ओकेई का परिवार था।

स्वयं भी कभी कल्पना न कर सकने वाले डरावने स्वर में क्रोध से भरे शब्द मेरी जबान से निकल पड़े।

"चले आए? आज मुझे इसी समय कुछ काम से बाहर जाने कि आवश्यकता है। क्षमा करना, फिर कभी आना।"

ओकेई एक समझदार मध्यायु की स्त्री हो चुकी थी। आठ वर्षीय बच्ची ठीक नौकरानी के काल वाली ओकेई जैसी दिख रही थी। मूर्खों की तरह खाली आँख से मुझे ताके जा रही थी। ओकेई के एक शब्द बोलने से पहले ही, मैं एक प्रकार कि उदासी के साथ, भागते हुए समुद्र तट की ओर निकल पड़ा। हाथ में लिए हुए उस बांस की छड़ी से तट पर उगे हुए घास को अलग-अलग करते हुए, एक बार भी बिना पीछे मुड़े हुए एक-एक कदम पटकता हुआ किसी

दीवाने कि तरह चलता हुआ तट को पार कर शहर की ओर सीधा चल पड़ा। मैं शहर में क्या कर रहा था? मैं निरर्थक सिनेमा घरों के पोस्टरों को देखता, कपड़े की दुकानों की सजी खिड़कियों को ताकता, जीभ को दांतों से काटता हुआ चल रहा था। दिल के किसी कोने से हार गया! हार गया! के बड़-बड़ाने की ध्वनि आ रही थी। नहीं यह नहीं हो सकता, मैं स्वयं को एक जोर का झटका देता और फिर चल पड़ता। लगभग आधे घंटे उसी तरह बढ़ता रहा, उसके बाद मैं पुनः घर की ओर लौट चला।

समुद्र तट की ओर निकल मैं वहीं पर खड़ा हो गया। देखो, सामने कितना शांत दृश्य है। ओकेई माता-पिता और बच्ची तीनों एक प्रकार के सुकून के साथ समुद्र में छोटे-छोटे, चिपटे-चिपटे पत्थर फेंक फेंक कर हंस-खेल रहे थे। जहां मैं खड़ा था वहाँ तक उनके स्वर सुनाई दे रहे थे।

"निश्चय ही", चौकीदार ने जोर लगा कर पत्थर फेंकते हुए, "दिमाग के काफी तेज आदमी हैं न? निकट भविष्य में वह जरूर एक महान आदमी बनेंगे।"

"अवश्य ही! अवश्य ही!" ओकेई ने गर्व के साथ जोर से कहा। "वह बचपन में थोड़ा अलग थे। अपने से नीचे वाले लोगों से भी दयालुता और शिष्टता से पेश आते थे।"

मैं खड़ा खड़ा रो रहा था। मन की वे उलझनें, एक अच्छी वेदना का अहसास कराते हुए अश्रु के साथ पूरी तरह से बह कर साफ़ हो गयीं।

मैं तो हार गया। यह तो अच्छी बात है। इसे तो स्वीकारना ही होगा। उन लोगों की जीत मेरे कल की शुरुआत के लिए एक नई किरण सिद्ध होगी।

---

[1] जापानी में 'दोरो' शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ 'कीचड़' होता है। किन्तु हमारे शोध के अनुसार फुनाबशी शहर के जिस क्षेत्र का वर्णन इस कहानी में किया गया है वह एक ज्वारीय क्षेत्र है।

[2] इस काल में १८० मिली लिटर की बोतल का वर्णन पाया जाता है।

[3] इस काल की जापानी कहानियों में व्यक्ति वाचक संज्ञा के लिए इस प्रकार की पद्धति सामान्य रूप से पाई जाती है।

[4] जापानी में 'शिकिदाई' शब्द का प्रयोग किया गया है। यह जापानी घर के अंदर द्वार के निकट बना एक प्रकार का सीढ़ीनुमा चबूतरा होता है जिसपर खड़े होकर आगंतुक के साथ भेंट-वार्ता की जाती है।

[5] गर्मी के मौसम में पहने जाने वाला एक प्रकार का जापानी वस्त्र।